वार्षिक मूल्य 50 रूपये

# धर्म जीवन

## जनवरी – 2024


- ❖ *परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 173 वां शुभ जन्म महोत्सव*
- ❖ *भगवान देवात्मा एक आदर्श पुत्र*
- ❖ *माता पिता की समस्याएं*
- ❖ *हमारे वृद्ध माता–पिता 'शाही क़ैदी' नहीं*
- ❖ *एक समर्पित बेटी – मणि बेन*
- ❖ *सन्तान अनुराग का बोध*
- ❖ *हमारे धोखे*
- ❖ *हम किस रूप में ढल रहे हैं?*
- ❖ *माता पिता के सम्बन्ध में सन्तान के लिए उपदेश*
- ❖ *देव समाज के पाठ और विचार के साधनों की तालिका (वर्ष 2024 ई०)*

# परम पूजनीय भगवान देवात्मा का 173 वां शुभ जन्म महोत्सव

पिछले वर्षों की तरह ही इस वर्ष भी गुरू महाराज का 173 वां शुभ जन्म महोत्सव डेराबस्सी के निकट देव आश्रम में पूर्ण हर्षोल्लास से मनाया गया। सितम्बर में सत्य धर्म बोध उत्सव के बाद सेवकों में महोत्सव पर आने और उसकी तैयारियों में भाग लेने का अजब उत्साह था। देव आश्रम में गोपाल जी पहले से रमेश जी की सहायता से सफाई आदि का काम करवाते रहे। 3 दिसम्बर को कुछ धर्म सम्बन्धी चण्डीगढ़ पधारे, जिसमें आने वाले महोत्सव के विषय में विचार विमर्श किया गया। श्रीमान सुखदेव जी जोसन चण्डीगढ़ ही रह गए और गोपाल जी के साथ सहायता के लिए खुशी खुशी तैयार हो गए। दोनों ने मिलकर देव आश्रम में सफाई, बिजली आदि की तारों को सुव्यवस्थित करने का बहुत सा Pending काम किया। 2-3 दिन पहले भाटिया साहिब एक साथी के साथ आ गए। फिर जसविन्द्र जी, गौतम जी, और जलधर जी ने आकर भी बहुत सी सजावट, बिस्तरे, चारपाईयां आदि लगाने की सेवा सम्भाल ली। यह सब सेवा के नज़ारे दिल को छू रहे थे। इतनी खुशी और उत्साह से बिना कोई शिकायत के सबने मिलकर देव आश्रम को दुल्हन की तरह सजा दिया। मल्लेका से रोशनी आदि के लिए अलग पार्टी आई, जिसने सारे आश्रम को रोशनी से जगमगा दिया। डा० नवजोत जी पिछले वर्षों की तरह खाना बनाने वाली पार्टी संगरूर से लाए। कफायती दर से सारा राशन वह संगरूर से ही लेकर आए। इस प्रकार सबने मिलकर खुशी और उत्साह से भरकर महोत्सव को सफल बनाने में अपना सहयोग दिया। नेचर की सहायकारी शक्तियों का इसमें सबसे बड़ा सहयोग है, हम नीच जीवनधारी मनुष्यों के वश की बात नहीं। नकारात्मक सोच हमें डुबो देती है। समाज और गुरू का मिशन तो सहायकारी शक्तियों और गुरू महाराज की अपार कृपा से तरक्की करने के लिए है। यह आस्था सब धर्म सम्बन्धियों में बढ़ रही है। जितना उत्साह इस वर्ष सेवकों में था, उसको देखकर नेचर की विकासकारी शक्तियों पर विश्वास दृढ़ हो रहा है। इस वर्ष कोई म्यूजिक मास्टर नहीं था, परन्तु भजन गाने की बारी नही आ रही थी। पिछले सालों में हमारे पास बच्चों की सभा में कोई विशेष बच्चे नहीं होते थे। इस वर्ष सरताज जी और उनके पारिवारिक जनों ने बच्चों को इतनी मेहनत से तैयार किया, कि उनके द्वारा बताई जीवन कथाएं कमाल की थी।

विशेष दिन पर सुबह के समय इतने सेवक थे, जो कभी नहीं दिखे, परम पूजनीय भगवान की जय बार-बार जय ध्वनि से आश्रम गूंज रहा था। बैंड बज रहा था, और लगभग सभी धर्म सम्बन्धी पूरे जोश से नाच रहे थे। बहुत ही उत्साहवर्द्धक दृश्य था। फिर कतार में गुरू को श्रद्धा के फूल चढ़ाने को सब उत्सुक थे और कतार में चल रहे थे।

सभाओं का स्तर भी पहले से और अच्छा लगा, जिसे कि श्रोतागणों ने महसूस किया।

इस वर्ष भी लंगर, दोनों समय का नाश्ता दिया गया। रात को सब को दूध दिया जाता रहा।

दो किताबों का विमोचन हुआ। एक माननीय श्रीमान बलदेव सिंह जी के लेखों का पहला भाग "मेरे दिल के उद्गार" प्रकाशित हुआ, दूसरी किताब "बाबा जी" (अंग्रेजी से हिन्दी में अनुवाद) प्रकाशित हुई। जिस जोश से धर्म सम्बन्धी विदा हुए हैं, लगता है कि वह अपने-अपने क्षेत्र में बढ़ चढ़ कर काम करेंगे और गुरू मिशन को आगे ले जाने में सहायक होंगे।

महोत्सव का विस्तृत विवरण अगले अंक में दिया जाएगा। देव समाज प्रबन्ध की ओर से सब धर्म सम्बन्धियों का बहुत बहुत हृदयगत धन्यवाद।

-सुरजीत बराड़

# धर्म जीवन

खण्ड 34 अंक 1
जनवरी – 2024
वार्षिक मूल्य 50 रुपये

सम्पादिका
सुरजीत बराड़

सह सम्पादक
गौतम गोनियाना


## भगवान देवात्मा एक आदर्श पुत्र

देवात्मा में जन्म काल से ही देवशक्तियाँ बीजरूप में आई थीं। वह सत्य और शुभ के पूर्ण अनुरागी थे और मिथ्या और अशुभ को पूर्ण रूप से घृणा करते थे। मनुष्य सुख का अनुरागी है और दुख को घृणा करता है।

हित अनुराग के विकास ने देवात्मा को बचपन से ही अति सुंदर और महान रूप दे दिया था। अपने बड़ों और विशेषकर अपने माता – पिता के संबंध में श्रद्धा और सम्मान का हित मूलक भाव उनमें बहुत गहराई से जागृत और विकसित हो गया था।

अपने सम्मान और श्रद्धा भाव के विषय में देवात्मा ने लिखा है – "अपने घर व अपने वंश के अपने से बड़े संबंधियों और शिक्षकों और अन्य माननीय जनों के प्रति मेरे भीतर बाल्य काल से ही न्यूनाधिक सम्मान का भाव जागृत हो गया था। मैं उस समय की प्रथा के अनुसार अपने घर और वंश के बड़े – बड़े संबंधियों के भिन्न अपने मुख्य शिक्षक के चरणों को स्पर्श करके उन्हें प्रणाम करता था और उनके भिन्न अन्य सब सम्मान के योग्य जनों को माथे पर हाथ रखकर और उनके आगे सिर झुकाकर सलाम, बंदगी और आदाब अर्ज़ आदि कहकर सम्मान प्रदर्शन किया करता था। मैं उनके सामने खड़े होने, बैठने और उनके साथ बातचीत करने में भी अपने इसी सम्मान भाव से परिचालित होता था। मैं किसी बड़े की किसी बात को अपनी समझ के विपरीत पाकर उसकी पीठ के पीछे परंतु किसी और के सम्मुख उसकी खिल्ली नहीं उड़ाता था और जैसे उनके सामने मैं सम्मान देता था, वैसे ही उनकी अवर्तमानता में भी उनके संबंध में अपने हृदय के इस उच्च भाव के अनुसार सम्मान सूचक ही कोई क्रिया करता था और जैसे सैकड़ों और मनुष्य केवल किसी के डर से व दिखलावे के लिए किसी के सम्मुख कोई बाह्यक सम्मान प्रदर्शन करते हैं, परंतु उनकी पीठ के पीछे अपने नीच घमंड व किसी अन्य नीच भाव की तृप्ति के लिए फिर उन्हीं की एक या दूसरी बात को कुछ का कुछ बनाकर व उस पर अपनी घृणा सूचक कोई फबती बात मढ़कर व मखौल करके अपनी ऐसी नीच करतूतों के द्वारा खुशी हासिल करते हैं और ऐसी बुरी खुशी के जोश में खूब हँसते और खिलखिलाते हैं और अपनी ऐसी अनुचित क्रियाओं से अपने हृदयों को पतित और मैला करते हैं, वैसा कोई भाव मुझमें वर्तमान न था। इसलिए जिस किसी के संबंध में जितना

कुछ श्रद्धा और सम्मान का भाव था, वह पवित्र था।"

अपने हितमूलक कृतज्ञता के भाव के विषय में देवात्मा लिखते हैं - 'हित अनुरागी होने के कारण मेरे लिए यह एक स्वाभाविक बात थी कि मेरा जिस किसी के द्वारा कुछ भी हित हो, उसके इस हित के सौंदर्य को उपलब्ध करूँ और इस उपलब्धि से अपने आपको उपकृत व ऋणी व कृतज्ञ अनुभव करूँ और अपने इस भाव से परिचालित होकर ऐसे किसी ऋण के परिशोध के लिए मैं उसके संबंध में जिस प्रकार से जहाँ तक सेवाकारी बन सकता हूँ, उस - उस प्रकार से वहाँ तक अपने इस भाव की तृप्ति करूँ। मैं इसी भाव से परिचालित होकर बाल्यकाल से ही अपने माता - पिता की इच्छा के अनुसार उनकी और घर संबंधी अन्य कई प्रकार की सेवा किया करता था और ऐसी कई प्रकार की सेवा के भिन्न मैं अपने इसी भाव से अपने मुख्य शिक्षक के घर पर जाकर उनके संबंध में भी सेवा विषयक एक व दूसरे प्रकार का काम किया करता था और अपने घर के अन्य कामों के भिन्न मैं अनेक बार अपने पिताजी के पाँव भी दबाया करता था।"

(1) वह श्रद्धा भाव से भरकर अपने श्रद्धेय माता - पिता के चरणों को छूकर प्रात: प्रणाम किया करते थे।

(2) इसी श्रद्धा भाव से भरकर उन्होंने अपने श्रद्धेय पिताजी के चरणों को धोकर चरणामृत को अपने माथे से लगाया था।

(3) अपना जीवन व्रत ग्रहण करने के बाद जबकि सैकड़ों लोगों ने उन्हें पूजनीय गुरू रूप में धारण किया हुआ था, तब एक बार जब वह अपने नगर गुरई खेड़ा (श्री अकबरपुर) पधारे तब अपने श्रद्धेय माताजी के चरणों में उन्होंने साष्टांग लेटकर प्रणाम किया। उस समय उन्होंने इस बात की भी परवाह नहीं की कि उन्होंने जो साफ और उज्जवल वस्त्र पहने हुए हैं, वह फर्श की धूल - मिट्टी से मैले हो जाएँगे। माता का रूप उन्हें उस समय इतना महान दिखाई दिया कि वह खड़े न रह सके और भूमि पर लेटकर अपनी जन्मदाता माता के पवित्र श्री चरणों को अपने मस्तक से छुआ।

(4) कई बार माता - पिता के साथ किसी एक या दूसरे विषय पर मतभेद होने पर भी वह कभी नहीं भूले के माता - पिता मेरे जन्मदाता, पालनकर्ता, रक्षाकर्ता ओर शिक्षादाता हैं। उन दिनों की प्रथा के अनुसार उनके बचपन के एक विशेष अवसर पर माता - पिता ने चाहा कि उनको जेवर पहनाएँ, परंतु उन्होंने सम्मानपूर्वक जेवर पहनने से इनकार कर दिया, क्योंकि वह उनका पहनना हानिकारक समझते थे। बच्चों के लिए खेलना हितकर होता है। उनके श्रद्धेय पिताजी उनका खेलना कुछ अधिक पसंद न करते थे, तथापि वह उसे अपने लिए हितकर जानकर छोड़ना न चाहते थे और उनसे कभी - कभी भर्त्सना पाकर खेलते रहते थे। उन दिनों स्त्रियों को पढ़ाना प्राय: बुरा समझा जाता था, फिर भी उन्होंने अपनी एक भावजा और भतीजी को विद्या पढ़ाना आरंभ किया। इस विषय में माता - पिता की विरोधता की परवाह न की। श्री अकबरपुर में अपनी पढ़ाई समाप्त करने के बाद वह चाहते थे कि रुड़की कॉलेज में जाकर पढ़ें, परंतु उनके श्रद्धेय माता - पिता जी उन्हें इतनी दूर भेजना नहीं चाहते थे, परंतु वह फिर भी रूड़की कॉलेज गए और वहाँ की पढ़ाई जारी रखी।

(5) वह बचपन में घर में माताजी की घरेलू

कामों में सहायता करते थे। प्राय: रात को सोने से पहले अपने पिताजी के पाँव दबाते थे और जब माताजी घर का काम-काज करती थीं, तो अपने छोटे भाई की देखभाल करते थे।

(6) रुड़की कॉलेज के पढ़ने के दिनों में उन्होंने दो वर्ष की अवधि में अपने माता-पिता से केवल 50 रुपए की सहायता ली थी। बाकी का खर्चा वह वजीफे से चलाते थे जो उनको मिलता था। अपनी पढ़ाई का बोझा अपने माता-पिता पर कम से कम डालना चाहते थे। अपनी नौकरी के दिनों में अपने ऊपर कम से कम खर्च करके बाकी का सारा वेतन अपने श्रद्धेय माता-पिताजी को भेज देते थे।

(7) अपने पिताजी के परलोक गमन पर उन्होंने अपने हिस्से की पैतृक संपत्ति माताजी के नाम करवा दी और माताजी के देहावसान के बाद उस पैतृक संपत्ति में से कभी एक पैसा भी नहीं लिया, बल्कि सारी की सारी अपने छोटे भाई के नाम करा दी। 13 दिसम्बर, सन् 1875 को अपने एक पत्र में उन्होंने अपनी माता जी को लिखा "मैं इस बात से बहुत खुश हूँ कि आप मुझसे सब प्रकार से संतुष्ट और प्रसन्न हैं। मैं चाहता हूँ कि मुझे आपकी अधिक से अधिक प्रसन्नता लाभ हो। आप मुझे सदा अपना सेवकारी पुत्र समझें। आप अपने दिल में मुझ से कोई संकोच न करें। जो कुछ आपकी ज़रूरत हो, उसे आप दिल खोलकर मुझ पर प्रकट किया करें। मैं उसे यथा साध्य अवश्य पूरा करूँगा।"

(8) नौकरी के दिनों में अपने माता-पिता की बीमारी में वह किसी हकीम व डॉक्टर से पूछकर दवाई के नुस्खे लिखकर भेजते थे। उन्होंने अपनी धर्म पत्नी श्रीमती लीलावती जी को अपने दिसम्बर, सन् 1873 के पत्र में लिखा था- "तुम को चाहिए कि परदे की रस्म छोड़ दो और मेरे पिता से परदा न करो और उनकी बीमारी में स्वयं उनके पास जाकर उनका हाल पूछो और सब तरह से उनकी सुश्रूषा करो। यह तुम्हारा पवित्र कर्तव्य है।" (उन दिनों परदे की जबरदस्त रस्म थी।)

अपने एक और पत्र में उन्होंने लिखा- "प्रिय लीलावती ! मुझे बहुत शोक है कि माताजी बीमार हैं। तुम्हें चाहिए कि पूरे दिल से उनकी सेवा करो और उन्हें अपनी सेवा से प्रसन्न रखो। मुझे उनकी बीमारी से बहुत दुख है। मैं उनसे बहुत दूर होने के कारण इस समय अपने तन के द्वारा उनकी कोई सेवा नहीं कर सकता।"

(9) देवात्मा महसूस करते थे कि उनके सिर पर उनके माता-पिता का बहुत बड़ा कर्ज़ा है क्योंकि उन्होंने उनको जन्म दिया, उनका पालन-पोषण किया, पढ़ाया-लिखाया, जिससे वह खुद अपने पाँव पर खड़े होने के योग्य बने। माता-पिता का यह ऋण इतना अधिक था कि किसी प्रकार भी उतारा नहीं जा सकता था। जब वह सरकारी नौकरी करते थे, तो उनके श्रद्धेय पिताजी ने पितृ-प्रेम से भरकर उन्हें एक दुशाला देना चाहा जिसे वह अपने प्रयोग में नहीं लाते थे। देवात्मा ने इस दुशाले को बहुत दीनता और नम्रतापूर्वक लेने से इनकार कर दिया। उन्होंने महसूस किया कि उन पर पहले ही माता-पिता का बहुत कर्ज़ा है और वह इस ऋण के बोझे को और अधिक नहीं बढ़ाना चाहते और यह बात सही है कि बच्चों पर माता-पिता का बहुत बड़ा ऋण होता है, परंतु जिस संतान में कृतज्ञता का भाव नहीं होता और जो बच्चे स्वार्थ की घृणित भावना से भरे रहते हैं, वह अपने माता-पिता के प्रत्येक पैसे की कमाई पर अपना हक़ जतलाते हैं

और क्रोध से भर जाते हैं, जब उनके जन्मदाता उपकारी माता - पिता अपनी ही कमाई को किसी भले कारज में खर्च करना चाहते हैं। कृतज्ञता का यह अभाव और बच्चों में स्वार्थपरता की बहुत बढ़ी हुई भावना ही उनके अपने माता - पिता के संबंध को बहुत कड़वा बना देती है।

परम पूजनीय भगवान देवात्मा के सुपुत्र श्री पंडित जी ने अपने एक बयान में फरमाया कि मेरे लिए अपने देवात्मा पिता के जीवन के इस सारे दृश्य का शब्दों में बयान करना कठिन है। भगवान की आयु 75 वर्ष की हो चुकी है। वह अपने पद के विचार से सारे मनुष्य मात्र के सत्य उपास्य देव हैं, परंतु फिर भी अपने उपकारी माता - पिता की छवि के सामने आने से इस तरह बिलख - बिलखकर उनके संबंध में अपने भावों का प्रकाश कर रहे हैं, जिससे प्रगट होता है कि उनके देव हृदय में अपने माता - पिता के संबंध में श्रद्धा और सम्मान का भाव कैसे जोरदार और सुंदर रूप में वर्तमान है!

फिर भगवान प्राय: 55 वर्ष के लंबें समय से जब से उन्हें ऋषि जी ने यह उपदेश दिया कि माता - पिता के लिए शुभकामनाएँ किया करो, तब से लेकर आज तक प्रतिदिन अपने साधन में माता - पिता को याद करके उनके संबंध में न केवल अपनी श्रद्धा और सम्मान का प्रकाश करते रहे हैं, बल्कि अपने दिल से निकली हुई मंगलकामना की जोरदार लहर उन तक पहुँचाकर उनका आत्मिक हित करने का विशेष यत्न करते रहे हैं। और इस काल में कोई एक दिन भी ऐसा नहीं गुजरा कि जिस दिन भगवान ने (हाथ जोड़कर और सिर झुकाकर) अपने माता - पिता को प्रणाम और याद न किया हो। इसकी तुलना में हमारी अपनी अवस्था कैसी घटिया है! न केवल हम प्रतिदिन अपने माता - पिता के उपकारों को स्मरण करके सच्चा साधन नहीं करते, बल्कि कई बार अपनी अनुचित क्रियाओं से उनके प्रति सख़्त आघातकारी प्रमाणित होते हैं।

# माता पिता की समस्याएं

पारिवारिक और सामाजिक समस्याएं नीच जीवन, अज्ञान और अंधकार की उपज हैं। जहां उच्च भाव हैं, उच्च जीवन है वहां यह समस्याएं या तो उत्पन्न नहीं होती या उनका तुरन्त समाधान हो जाता है। नीच भावों में अन्धकार है और उल्टी दृष्टि है, उनमें रोशनी नहीं है और बिना रोशनी के समस्याओं का हल न सूझ सकता है न हो सकता है। रूहानी रोशनी में व सत्य धर्म के सत्य ज्ञान और उच्च जीवन में नीच भावों की समस्याएं समाप्त हो जाती हैं।

हमें कई पिताओं से उनके दुख की कथा सुनने का अवसर मिलता है। उन सबने सन्तान के अनुचित मोह और अपनी नैतिक दुर्बलता के कारण अपने लिए दुखद परिस्थितियां उत्पन्न कर लीं। एक पिता ने बताया कि मैंने सारी आयु ईमानदारी और मेहनत से धन कमाया और अपनी सन्तान को पाल पोस कर बड़ा किया और पढ़ाया लिखवाया और अपना लाखों रुपया उनके हवाले कर दिया। अब वह मुझे कहते हैं कि गुरद्वारे में जाकर रोटियां खाओ। हमारे सहारे मत रहो। जो पिता अपनी यह कथा सुना रहे थे वह भद्रजन प्रतीत होते थे परन्तु उन्होंने भी वही ग़ल्ती खाई जैसी हज़ारों और शायद लाखों माता पिता खाते हैं अर्थात ऐसी सन्तान को अपना सब धन सौंप

देना जो स्वयं कमा सकती है। जब सन्तान को मुफ्त का धन मिल जाता है। जिसके लिए उन्हें कोई परिश्रम नहीं करना पड़ा तो वह सन्तान उसका अनुचित व्यय भी करती रहती है और यह सब कुछ अपनी आँखों के सामने देखकर पिता और माता दुख की आग में जलते रहते हैं। सत्य धर्म का ज्ञान तो मनुष्य को यह रोशनी प्रदान करता है कि स्वयं कमाने के योग्य सन्तान को अपना धन सौंप देना न केवल उचित नहीं है बल्कि पतनकारी है, और उच्च भाव और उच्च लक्ष्य ऐसा बल प्रदान करते हैं कि मनुष्य ऐसी दुर्बलता और सन्तान अनुराग का शिकार होने से बच जाता है। सत्य धर्म की शिक्षा के अनुसार माता पिता को अपने निर्वाह के योग्य धन रखकर शेष परोपकार और पर सेवा में ही लगाना उचित है। इसी में उनके आत्मा का भला है। सन्तान के मोह में ग्रस्त होकर जब एक पुरुष सन्तान को धन सौंप देता है, और ऐसी सन्तान को सौंप देता है जिसके भीतर अपने माता पिता के लिए कोई कृतज्ञता का भाव नहीं और जो महा स्वार्थी है, तो अपने पांव पर तो आप कुल्हाड़ी मारता ही है, अपनी धर्म पत्नी को भी संकट में डाल देता है। उसकी मृत्यु होने की दशा में उसकी विधवा पत्नी को अपनी सन्तान का मोहताज होकर और आत्म सम्मान खोकर जीना पड़ता है।

दूसरी ग़ल्ती माता पिता की यह होती है कि वह अज्ञान और नीच लक्ष्य के कारण सन्तान का पालन पोषण विशुद्ध भावों से नहीं करते। उसमें उनके यह आशाएं जुड़ी रहती हैं कि यह हमें कमा कर खिलाएंगे और हमारे बुढ़ापे का सहारा बनेंगे। परन्तु सन्तान में अधिकतर स्वार्थ की ही भावना होती है इसलिए माता पिता को दुख और निराशा का ही मुंह देखना पड़ता है।

कई माता पिता को देखते है कि पुत्र और पुत्र वधु उनका कोई सम्मान नहीं करते या पुत्र कुछ सेवा करना चाहता है तो पुत्र वधु नहीं करने देती और पुत्र अपनी पत्नी का दास होता है। ऐसी अवस्था में आत्म सम्मान रखने वाला जन कदापि ऐसी सन्तान के साथ रहना सहन नहीं कर सकता। परन्तु वह मोह बन्धन और सन्तान का दासत्व ही क्या जो आत्म सम्मान और सुख शान्ति से जीने दे। देव समाज में एक एक पिता के ऐसे दृष्टान्त हैं जिन्होंने अपना धन परोपकार में लगाया और सन्तान को नहीं सौंपा और न ही सन्तान के मोहताज बने।

माता पिता का यह पवित्र कर्तव्य है कि वह अपनी सन्तान को ऐसा उच्च वातावरण प्रदान करें और बाल्यकाल से उनको ऐसी उच्च संगत और उच्च प्रभावों में रखें कि वह स्वार्थी न बनें। उसमें अपने माता पिता के लिए श्रद्धा और कृतज्ञता का भाव उत्पन्न हो। माता पिता को उनके शरीर को स्वस्थ रखने और पढ़ाने लिखाने की ही चिन्ता होती है परन्तु उनके आत्मिक स्वस्थ्य की नहीं। उनके दुखद परिणाम उन दोनों को ही भुगतने पड़ते हैं। देव समाज में भगवान देवात्मा की कृपा से ऐसे अनेक माता पिता हैं जिनकी सन्तान उनके लिए श्रद्धा और कृतज्ञता के भाव रखती है और अपनी सेवाओं से माता पिता को निहाल कर देती है।

योरुप आदि में अधिकतर माता पिता हमारे देश के माता पिता की न्याई सन्तान को सब कुछ सौंप कर स्वय मोहताज नहीं बनते। यहां तक कि अनेक सन्तान बड़े होकर विद्या अध्ययन में भी अपने माता पिता पर बोझ नहीं बनते, परन्तु कृतज्ञता की शिक्षा और कृतज्ञ बनाने का कार्य कहां है? इसलिए वहां माता पिता के पास अपने

निर्वाह के लिए धन भी हो तो यह सन्तान के प्यार और कृतज्ञता से वंचित रहते हैं और उन्हें अकेलेपन का जीवन बिताना पड़ता है। सारी समस्या उच्च भावों के अभाव और नीच भावों या नीच अनुरागों के आधिपत्य की है। और उस का समाधान एक मात्र आत्मा के उच्च भावों में और उच्च जीवन में है, सत्य - धर्म के सत्य ज्ञान और धर्म भावों की प्राप्ति में है।

# हमारे वृद्ध माता - पिता 'शाही क़ैदी' नहीं

घरों में हमारे माता - पिता और सास - ससुर भी होते हैं जो हमसे आयु में बहुत बड़े होते हैं। वे हमसे पहली पीढ़ी के व्यक्ति होते हैं। छोटे बच्चे होते हैं, जो आयु में हमसे बहुत छोटे होते हैं - वे हमसे अगली पीढ़ी के होते हैं। इन दोनों के साथ - साथ हमारे भाई - बहन (या पति के भाई - बहिन अर्थात् ननद - देवर - जेठ आदि) होते हैं, जो आयु में हमारे आस - पास के ही होते हैं तथा हमारी अपनी पीढ़ी के ही होते हैं। इन तीनों पीढ़ियों के साथ हमारे सम्बन्ध बड़े घनिष्ट होते हैं। इन सब को ही हमारी प्यार भावना, सेवा - श्रद्धा व देख - रेख की आवश्यकता होती है।

सास - ससुर के साथ प्राय: हमारे सम्बन्ध मधुर एवं सहज नहीं होते। उनके द्वारा बहु व बहु के मायके वालों में दोष निकालते चले जाना एक सामान्य सी बात है, जिस से प्राय: घरों में अनमेल - दु:ख एवं अशान्ति उत्पन्न हो जाती है। स्थिति बहुत कष्ट - प्रद होती है, पर उस से निकलने का उपाय भी तो हमें ही करना होता है। वे तो पुरानी पीढ़ी के लोग हैं - उनके अपने संस्कार है, अपना सोचने का तरीका है तथा सम्बन्धों को देखने की अपनी दृष्टि है। उनको हम कैसे बदल सकते हैं? वो लोग तो वैसा ही बोलेंगे, वैसा ही सोचेंगे जैसा कि वह देखते - सुनते व भोगते चले आए हैं। पर हमें दो बातों पर ध्यान देना चाहिए। एक तो यह कि वे हमारे वास्तविक हितैषी व वास्तविक मंगलाकांक्षी हैं। हम उनकी सन्तान हैं और उनकी हमारे से वही अपेक्षा है जो हम लोगों की अपने बच्चों से है। साधारणत: वे कभी हमारा अमंगल या बुरा करना तो क्या, सोच भी नहीं सकते। और दूसरी बात ध्यान देने की यह है कि वे अपनी आयु के कारण हमसे सेवा पाने के अधिकारी भी हैं। बहुत से ऐसे कार्य हैं, जिनकी उन्हें आवश्यकता तो है, पर वे अपनी आयु, बुढ़ापे या दुर्बल स्वास्थ्य के कारण उन्हें कर नहीं पाते। उनकी इन जरूरतों को पूरा करना तो हमारा ही कर्त्तव्य बनता है। भगवान देवात्मा ने हमें सभी सम्बन्धों में अपने कर्तव्य - कार्य निभाने के आदेश दिए हैं। माता - पिता के प्रति सच्ची श्रद्धा तो यही हो सकती है कि हम उन्हें कष्ट न पहुंचा कर उन्हें आराम और सुविधा देने का प्रयत्न करें। अरे! अगर सास या ससुर ने हमें या हमारे मायके के लिए कुछ कड़वा कह भी दिया - तो क्या? क्या हम चुप रह कर उसको सहन नहीं कर सकती? दो चार दफा ऐसा हो जाने पर वे लोग अपने आप ही वैसा बोलना बन्द कर देंगे क्योंकि कड़वा बोलना या दूसरे का मन दु:खाना वास्तव में किसी को भी अच्छा नहीं लगता है। ऐसा जो भी करता है, वह या केवल अभ्यास - वश और या किसी भय के कारण।

प्राय: क्या होता है कि हम लोग घरों में इन बुजुर्गों की शारीरिक आवश्यकताएं पूरी कर

देते है। यथा - समय पर भोजन, चाय, नाश्ता, बिस्तर, धुले कपड़े आदि, पर यह भूल जाते हैं कि उन की कुछ भावानात्मक आवश्यकताएं भी हैं, वे घर के सदस्य - बल्कि एक माननीय सदस्य हो कर रहना चाहते हैं। एक बुजुर्ग सज्जन अपने बेटे के पास रहने गए - बेटा बड़ा अफसर था - उसका बड़ा परिवार था। शानो - शौकत, नौकरों - चाकरों की कोई कमी न थी। पर बुजुर्ग सज्जन थोड़े ही दिन वहां रहे और फिर लौट आए। कारण पूछने पर वे गहरी उदासी के साथ बोले - 'अरे वहां कैसे रहें - 'उन्होंने तो मुझे शाही कैदी बना कर रख दिया था'। एक बहन को जानती हूं। जब कभी उनके पास उनकी सास रहने के लिए आती है, तो वे पूरी कोशिश करती है कि दिन का अधिकांश समय वे उनके साथ बिताएं, नाश्ता व दोनों समय का भोजन वे सारे परिवार को उनके साथ बिठा कर करवाती है, अपनी किसी सहेली के आने पर पहले उसे उनसे मिलवाती है और आस - पास के घरों में रहने वाली वृद्ध महिलाओं को आदरपूर्वक उनसे मिलने के लिए बुलाती है। एक दिन सुबह घर का कामकाज निपटा कर मैं उससे मिलने चली गई - देखा तो रसोई घर में व्यस्त है और दीवानखाने में रौनक है। मैंने पूछा, इस समय क्या कर रही हो? - कोई मेहमान आए हैं क्या? बोली - हां, माता जी ने सहेलियों को एक पार्टी दी है, वे सभी दीवानखाने में हैं - देखा तो वह क्या हंस - हंस कर बातें कर रही हैं। पर तुमने इन सबके लिए इतना कुछ क्या - क्या बनाया है - बहुत से डोंगे देख रही हूं। मैंने पूछा, तो पता लगा कि सब के लिए लगभग अलग - अलग सामान बना है क्योंकि कोई चीनी नहीं लेती, किसी को नमक मना है, एक है जो तला कुछ नहीं खा सकतीं और एक और हैं जो बिना मिर्च - खटाई का सामान नहीं खातीं, सो सबके हिसाब से अलग - अलग बनाया है..... और फिर इसके बाद वे बोलीं - 'देखो, हम जब बच्चों की पार्टी देते हैं तो उनके हिसाब से सामान बनाते हैं न, तो आज बड़ों की पार्टी है, सामान उनके ही हिसाब से बनना चाहिए।' उस बहिन की इस बात ने जैसे एकाएक समझा दिया कि घर में ससुराल के बुजुर्गों की देख - रेख कैसे की जानी चाहिए। जब हम सब एक ही घर में रहते हैं, उसी घर को सबकुछ मानते हैं तो उनके माता - पिता को हम अपने माता - पिता के समान क्यों न माने?

परम पूजनीय भगवान् देवात्मा ने माता पिता सन्तान - व्रत के दिन निश्चित कर दिए हैं। उस में तो विशेष रूप से उनके शुभ - चिन्तन व श्रद्धा साधन हमें करना ही है, पर सारा वर्ष हमें अपने परिवार के माननीय सदस्य मान कर उनका उचित ध्यान रखना है।

हम जो कुछ भी करती हैं, कहती और सोचती हैं, हमारे बच्चे उस सब को देखते हैं। समय बीतते क्या देर लगती है। देखते - ही - देखते आपके बच्चे जवान हो जाएंगे और हम सब वृद्धों में गिने जाएंगे। उस समय क्या आप चाहेंगे कि आपके बच्चे जो आज नन्हें शिशुओं के रूप में आपके साथ चिपटे रहते हैं, वे ही आपको यह कहें कि 'हम जानते हैं - दादा जी (या दादी जी) के साथ आप क्या सलूक करती थीं।' ज़रा सोचिये, ऐसे सलूक से आपको कितना कष्ट होगा?

हमें ये अपमान - जनक शब्द कभी न सुनने का और हमें अपनी सन्तान की आंखों में कभी न गिरने के अवसर मिलें। हमें कभी अपने बड़ों की बद - दुआ का शिकार न होना पड़े, इन्हीं शुभ कामनाओं के साथ।

# एक समर्पित बेटी - मणि बेन

किसी के जीवन के सम्बन्ध में कितना अच्छा बनना यथेष्ठ है और उसमें कौन-कौन सी खूबियां है, जिन से कि हम कोई सबक सीखें।

मणिबेन कब जन्मी, कैसे पली, क्या शिक्षा पाई, उन्होंने कैसे त्याग को अपनाया, यह सब अनावश्यक प्रश्न हैं। जिस मणिबेन का हम यहाँ ज़िकर करना चाहते हैं, वह सचमुच एक अद्‌भुत चरित्र वाली तपस्वनि है जिसका जोड़ ढूँढना आसान नहीं।

सन् 1945 के जाड़े की बात है। सरदार वल्लभ भाई पटेल दिल्ली आए थे। उनकी बेटी मणि बेन भी साथ थी। सरदार पटेल एक खादी का कुर्ता और एक जाकिट में ही कड़ाके की सर्दी का सामना कर लेते थे और मणि बेन की आवश्यकताएं तो और भी कम थी। खादी की एक मोटी सफेद साड़ी और एक सफेद जाकिट उनके लिए पर्याप्त थे, चाहे कैसा ही कड़ा जाड़ा क्यों न पड़ रहा हो। कुछ-कुछ अधपके बाल, कद की नाटी और वजन की अत्यन्त हलकी मणि बेन यदि मुंह पर सफेद पट्टी बांध लेती, तो जैन साध्वी सी प्रतीत होती।

सरदार पटेल के दिमाग की मशीन हर समय काम करती रहती थी। उनको जीर्ण जुकाम की शिकायत सदा बनी रहती थी, इसलिए नाक को बार-बार साफ करते रहते थे और कमरे में टहलते रहते थे। बैठने की आदत उन्हें कम थी। मणि बेन के जीवन का ध्येय उनका अपना पिता रहा है। सरदार पटेल की उनकी छाया भी सूर्यास्त के उपरान्त छोड़ देती थी, परन्तु मणि बेन का पहरा रहता था, चौबीस घण्टे उनकी नज़र सरदार सोते हों या जागते, काम करते हों या विश्राम, हर समय उन पर सजग हो कर पड़ी रहती थीं। मणि बेन मुर्ति की तरह सरदार के निकट सदा प्रस्तुत रहती थी जैसे वह सरदार का ही अभिन्न अंग हों।

सरदार कैबिनेट की मीटिंग में भीतर चले जाते तो मणि बेन बाहर बैठ जाती थी। सरदार संसद में जाकर बैठते तो मणि बेन ऊपर गैलरी में जा बैठती।

सरदार का नित्य का अभ्यास था कि सुबह शौच स्नान के बाद टहलने जाएं। टहलना उनका तेजी के साथ होता था। तीन मील सुबह और दो-तीन मील शाम को। मणि बेन भी इस सब घूमने-टहलने में अपनी हड्डियों के पिंजर को दौड़ाती हुई साथ ही रहती थी। इस दौड़ में वह सरदार से एक कदम, केवल एक ही कदम पीछे रहती थीं।

सुबह के समय सरदार स्नान घर में स्नान करते, तो मणि बेन स्नान घर के दरवाजे के पास चरखा कातने बैठ जातीं। मणि बेन की एक आँख चरखे पर तो दूसरी आँख रहती थी स्नान घर के दरवाजे पर। भीतर से पानी की कल-कल की खांसने की या खड़ाऊं की, जो भी आवाज आती, उन सब के संकेत मणि बेन को याद थे। सरदार की हर गति का उसके पास एक कोष था जो उन्हें कंठस्थ था। पानी की एक तरह की आवाज़ के मायने थे, सरदार मुँह धो रहे हैं, दुसरी तरह का शब्द हुआ अब शरीर पर पानी डाल रहे हैं, अब गमछे से शरीर पोंछते हैं। अब धोती पहनते हैं। अब खड़ाऊं की आवाज आई और सरदार स्नानघर से निकलेंगे। बस! मणि बेन का चरखा बन्द और सरदार की चप्पल स्नानघर के दरवाजे पर जा सजी। सरदार बाहर निकले और चली मणि बेन

पीछे - पीछे।

कईयों के पास भोग की सामग्री ही नहीं थी, फिर भी बिना त्याग किए ही त्यागी कहलाए। पर सरदार ने सचमुच ही धन दौलत को त्यागा। बैरिस्टरी पास करके उन्होंने धन संग्रह किया। अंग्रेजी ठाठ का जीवन क्रम चलाया। बच्चों की पादरियों के स्कूल में भेज कर विद्या आरम्भ कराई और फिर सब कुछ त्यागा तो ऐसा त्यागा कि मुँह मोड़कर नहीं देखा। राज्य सत्ता आई तो वही सादा जीवन, वही रहन - सहन, वही खान - पान और वही वेश - भूषा। पर मणि बेन का त्याग तो और भी उत्कृष्ट। सरदार ने तो संसारिक सुखों का भोग करके त्यागा। मणि बेन ने तो भोग विलास को छुआ ही नहीं।

घर की देख - रेख में मणि बेन को बावचीं कहो या चाकर। सफाई घर में ऐसी कि कंचन सा आंगन। धूल खोजने पर भी न मिले। अपने पर खर्च कम - से - कम। सरदार के साथ संसद में जा कर उनके व्याख्यान के नोटस लेती। सरदार की डाक मणि बेन के हाथों से गुजरती। रात को दिन की सारी डायरी लिखतीं। रात को सरदार को सुला कर पीछे सोती और उनसे जागने से पहले उठती। एक ही शरीर मे वह सरदार की पुत्री चाकर, मंत्री, धोबी और अंग - रक्षक रही।

मणि बेन की पितृभक्ति यदि मूक थी, तो सरदार का पुत्री वात्सल्य भी मूक था। एक बार मणि बेण बीमार पड़ीं तो सरदार की जबान का ताला खुल पड़ा ..... ''यह मरी तो मैं मरा.....''

सरदार जब मृत्यु - शैय्या पर पड़े तो मणि बेन ने स्पष्ट जान लिया कि अब उनका अन्त आ गया है। मृत्यु - शैय्या पर पड़े सरदार गुनगुनाते रहते थे।

''मंगल मन्दिर खोलो दयामय''

सन् 1950 के जाड़े में दिल्ली के सरदार ने अन्तिम विदाई ली। मुम्बई पहुंच कर सरदार केवल तीन दिन जीवित रहे। मंगल मन्दिर के द्वार खुल गए। सरदार के प्राण निकले तो भी मणि बेन ने अपना विवेक अक्षुण्ण रखा।

कथाओं में पिता भक्त पुत्र मिलते हैं। मैंने राम और श्रवण कुमार, पति परायण सावित्री, सीता और अनेक देवियां इस देश में हो गई', सुना हैं। भाईयों में भरत का स्थान सर्व श्रेष्ठ है। परन्तु पिता पर अन्यन्य विश्वास रखने वाली कुमारी मणि बेन जैसी कोई दूसरी न सुनी।

## सूचना

*धर्म जीवन सम्बंधी हर प्रकार की जानकारी के लिए, चंदा आदि भेजने, कोई मैटर आदि भेजने के लिए साथ लिखे पते पर सम्पर्क करें या लिखें। :* - श्रीमान बलदेव सिंह जी

House No. 3154, Sector 21-D,
Chandigarh - 160 022
Mobile : +91 81465-53154
+91 98769-59659

***देव समाज के अकाउंट का पता इस प्रकार है।***

**DEV SAMAJ (G)**

**Central Bank of India, Sector 22, Chandigarh**

**Account No. : 3702002919 | IFSC Code : CBIN0280414**

# सन्तान अनुराग का बोध

मैं आपकी रोशनी में प्राय: दिन प्रति दिन दो विषयों पर विचार करता रहा हूँ :-

(क) काम अनुराग मूलक बन्धन

(ख) सन्तान अनुराग मूलक नीच मोह बन्धन आदि।

सन्तान अनुराग के सम्बन्ध में मुझे जो कुछ अनुभव होता रहा है, वह यह है :-

(1) इस अनुराग से परिचालित होकर मैं अपने बच्चों के स्थूल शरीर को प्यार करता हूं। वह मुझे उनके आत्माओं की सम्भाल और रक्षा की ओर ले जाने की योग्यता नहीं रखता। इसलिए मैं अस्थिर और असार धरती पर चलता हूँ, क्योंकि एक तो उनके आत्मिक हित की ओर से अन्धा हो कर मैं उनका उच्च कोटी का उपकारी नहीं बन सकता, दूसरे मैं उस वस्तु अर्थात उनके स्थूल शरीर को जिसे सदा के लिए इस संसार में रखना असम्भव है, प्यार करता हूं। अत: मैं अपनी जिन्दगी रेत पर खड़ी करता हूं और जब मुसीबतें आती हैं- कि जो अवश्य आती हैं-रेत की नींव खिसक जाती है, तब मानो मेरा सब कुछ लुट जाता है। यह अवस्था कैसी भयानक और कितनी शोचनीय!

(2) मुझे केवल उनके स्थूल शरीर ही दिखाई देते हैं। उनकी शारीरिक आवश्यकताएं या शारीरिक सुखों का अभाव जितना मुझे बेचैन करता है, उतना बेचैन मुझे उनकी आत्मिक आवश्यकताएं नहीं करती। इससे मेरा बहुत अनिष्ट हो सकता है। जैसा कि उन अनेक जनों का हुआ है जो अपने बच्चों के लिए रुपया छोड़ जाने या उनके शरीरों के लिए स्वाद के समान जुटाने और उन्हें मानसिक शिक्षा देने के लिए उच्च वातावरण को छोड़ गए हैं और अपने बच्चों को भी उस से बाहर ले गए है। मुझे पता है कि कुछ अवस्थाओं में माता-पिता की ग़लती के कारण बच्चे देव समाज को ही छोड़ गए है।

(3) यदि यह सन्तान का अनुचित प्यार बहुत बढ़ जाए तो यह मुझे उच्च जीवन और पर-सेवा से दूर ले जाएगा और मेरा बहुत सा कार्यगत समय स्वार्थ पूर्ति में व्यतीत होगा और मैं खुशी खुशी नीच वस्तु के लिए श्रेष्ठ वस्तु की कुर्बानी कर दूंगा।

(4) यह मुझे अन्यायकारी (unfair) और अनुदार (unjust) बनाता है।

(5) इनके अधीन रह कर मुझे अपने बच्चों के तो पहाड़ जैसे दोष भी राई जितने दिखाई देते हैं और दूसरों के छोटे दोष भी पहाड़ जितने लगते हैं। इस प्रकार मेरी देखने की ताकत पर परदा छा जाता है।

(6) सन्तान का प्यार नीच आत्माओं को मेरा मालिक बनाता है जो कि एक भयानक स्थिति है।

(7) जितने अंश यह मोह बलवान होता है, उतने ही अंश आपके साथ मेरा सम्बन्ध कमज़ोर होता है। मैं इसे अपना बड़ा दुर्भाग्य समझता हूं।

(8) उच्च जीवन में मेरा विकास खतरे में पड़ जाता है।

मैं अब इस अंग में अपने आप को अधिक रोशनी में पाता हूं। और अभी कई महीने और कई वर्ष मैं इस पर चिन्तन करूंगा। सम्भव है, आपकी शक्ति पाकर मैं इस नीच अनुरागों से ऊपर हो सकूं।

(श्रीमान पी. वी कनल जी का एक पत्र)

# हमारे धोखे

हम अक्सर अपने आप को धोखा देते रहते हैं और इसी धोखे और खुद - फरेबी में सारी आयु गंवा देते हैं।

एक धोखा हमारा यह होता है कि हम आत्मा की हानि और लाभ को अनुभव करते हैं। परन्तु यह केवल कहने की या जबानी कलामी की बात होती है। हम आत्मा और देवात्मा का नाम लेते रहते हैं। परन्तु उन की परवाह हमें नहीं होती या बराए नाम होती है।

शरीर की हानि को हम सचमुच अनुभव करते हैं। यदि तनिक भी हमें कहीं खराश आ जाए तो हम झट टैटनस का टीका लगवाते हैं क्योंकि हमने सुन रखा है कि यह साधारण सी खराश भी खतरनाक प्रमाणित हो सकती है। एक बहुत अच्छे सेवक ने बताया कि जब एक डाक्टर ने मुझे यह बताया कि आप को ब्लड प्रैशर (Blood Pressure) है तो नहीं परन्तु शरीर का रोहज़ान या Tendency ब्लड प्रैशर की ओर अवश्य है, तो मुझे तीन रातों तक नींद नहीं आई। कितना गहरा बोध है शरीर की हानि का! हम काफी धन खर्च करके चैकअप कराते हैं। मलेरिया न भी हो तो सावधानी के हेतु ही कुनीन खा लेते हैं ताकि मलेरिया से बचे रहें। कहीं हम पानी उबाल कर या फिलटर करके पीते है ताकि बीमारी के कीटाणु पानी में न हों। एक युवक प्राय: लाखों रुपया खर्च करके अमरीका जा कर अपनी बीमारी का इलाज कराके आए। जीवित रहने या शरीर की रक्षा के लिए हम क्या कुछ त्याग नहीं करते।

धन की और पदार्थों की हानि हमें अनुभव होती है। चोरी होने पर स्त्री पुरुषों को कातर हो कर रोते देखा जाता है कि "हाय ! हम लुट गए" धन और पदार्थ की रक्षा के लिए हम क्या कुछ उपाय नहीं करते। कई कई ताले, शटर, तिजोरियाँ लौकर, चौकीदार, काँटेदार तार, तहख़ाने, बीमा और न जाने क्या क्या सावधानी हम बरतते हैं। थोड़े से पैसे बचाने के लिए भाव - ताव करने में या मार्केट में घूमने में घंटो बिता देते हैं।

आचार को उल्ली न लग जाए या गर्म कपड़ों को कीड़े न खा जाएं इसके लिए हम भाँति - भाँति के उपाय करते हैं।

परन्तु आत्मा की दुनियाँ में बहुत कुछ हमारी बातें ही बातें होती है। हमारा धन का अनुचित प्यार बढ़ता जाए, हमारे मोह बन्धन और नीच आकर्षण बढ़ते जाएं, स्वाद अनुराग या नीच अभ्यास पक्के होते जाएं, हम सम्बन्धियों के दास होते जाएं, नीच लक्ष्य हमारा फौलाद या स्टील की न्याईं पक्का होता जाए, हमारे प्रिय जन उच्च संगत से चाहे जितना उदासीन होते जाएं, और हम और हमारे सम्बन्धी आत्मिक विचार से कितने ही बेहोश होते जाएं, हमें इन सब बातों की तनिक भी चिन्ता नहीं होती। एक एक सेवक अपनी सन्तान या प्रिय सम्बन्धी के शरीर की तो चिन्ता करते हैं उन्हें अच्छी खुराक न मिले, विद्या न मिले तो अपना सब कुछ अपर्ण करके भी उनकी यह त्रुटियाँ पूरी करना चाहते हैं। उनको बड़े से बड़े पद पर और बड़े से बड़ी तनख़्वाह प्राप्त करता देखना चाहते हैं, उसी में उन की खुशी है। किसी "बड़े" घर में अपनी सन्तान की शादी कर देना चाहते हैं यह सब बातें हो जाएं तो अक्सर वह बहुत तसल्ली या खुशी में रहते हैं। कभी वह इस बात की भी चिन्ता नहीं करते कि मेरी सन्तान को कई वर्ष से उच्च संगत नहीं मिली, उसका क्या हाल

और क्या अंजाम होगा। मेरे पुत्र मेरी पुत्री या मेरे अन्य प्रिय सम्बन्धी के पास देव समाज की कोई पत्रिका जाती है या नहीं।

हमारा स्वार्थ बढ़ता जाए और हम और हमारे सम्बन्धी केवल अपने लिए जीते रहें तो हमें इसमें कोई हानि या दु:ख की अनुभूति नहीं होती। निन्दा चुगली करके या सुन के, अपने आपको बढ़िया और दूसरों को घटिया प्रकट करके हमें तृप्ति मिलती है और हम समझते हैं कि हमने मोर्चा फतह कर लिया। यह हम कहाँ अनुभव करते हैं कि हम ने विष खा लिया और अपने घमंड और नीच घृणा के रोग को बढ़ा लिया। हमें दूसरों की हीनताओं और अयोग्यताओं का लेखा जोखा और प्रचार करने में तो बड़ा रस मिले परन्तु अपने आत्मिक कोढ़ की कोई चिन्ता न हो तो यह हमारा आत्मिक पागल-पन है। हस्पताल में पड़े रोगी को सब से अधिक चिन्ता अपने रोग की होती है न कि दूसरे मरीज़ों की।

हम अपने नीच भावों का कितना फिक्र करते हैं जो दिनों दिन हमें निस्तेज, दुर्बल और अयोग्य बनाते जा रहे हैं। प्रात: से रात तक खाने और कमाने और अपनी और सम्बन्धियों की आर्थिक अवस्था ठीक करने की जितनी चिन्ता और जितना संग्राम हम करते हैं उस का सौवां अंश भी आया हम आत्मिक आहार और उच्च भावों की कमाई की चिन्ता करते हैं और उसके लिए कोई विधि पूर्वक साधन करते हैं?

जिनको सचमुच अपनी और दूसरों की आत्मिक हानि अनुभव होती है और जिनका पैमाना आत्मिक लाभ होता है उनकी घटनाएं सम्मुख लाएं तो हम कुछ आत्म परीक्षण कर सकेंगें कि हम कहाँ खड़े हैं और हमारी वास्तविक अवस्था क्या है?

श्रद्धेय श्रीमान देवत्व सिंह जी को अपनी और दूसरों की आत्मिक हानि का बोध था। उनको अपने नीच अनुरागों और नीच घृणाओं से उद्धार पाने और उच्च भावों को विकसित करने की गहरी चिन्ता और कड़ी लगन थी। पन्द्रह वर्ष, हाँ अपने अन्तिम समय तक वह श्रद्धा बढ़ाने, कृतज्ञता बढ़ाने और नीच गतियों के प्रति घृणा और दु:ख उपजाने के साधन प्रति दिन कितनी कितनी देर करते रहे। टी. बी. की अन्तिम बीमारी में भी और जाड़ों के मौसम में वह प्रात: साढ़े तीन बजे उठ कर दो अंगीठियाँ सुलगा और तैयार करके अपने परम उपकारी भगवान देवात्मा के कमरे में रखते रहे। इस प्रकार के साधनों से वह कृतज्ञता का भाव बढ़ाते थे। केवल ज़बानी कलामी नहीं करते थे। वह अपना घमंड घटाने और हानि परिशोध का भाव बढ़ाने के लिए डेढ़ डेढ़ घंटा प्रतिदिन अपनी नीच गतियाँ लिखते थे।

श्रीमान धर्मबल जी उनके विषय में लिखते हैं :- "वह अपने निज के साधन में जिस प्रकार प्रतिदिन चार चार पांच पांच घंटे लगाते थे, उन के निकट स्वयं अधिक से अधिक धर्म का जीवन प्राप्त करने और उसी को औरों में उत्पन्न करने के कार्य की तुलना में जिस प्रकार और सब कुछ फीका हो चुका था .. .... उन के जीवन का इस प्रकार का उच्च दृष्टान्त मुझे जितना हितकर उपदेश देता रहता था -- उस की भी बड़ी विशेषता हैं

अपने भाई श्रीमान हितैषी सिंह जी को सांसारिक काम धन्धे छुड़ा कर उन्होंने देव समाज का कर्मचारी बनने के लिए तैयार कर दिया।

एक उच्च श्रेणी के सेवक ने समय से पहले नौकरी से रिटायरमेंट लेकर न केवल अपना जीवन देव समाज की सेवा में लगा दिया और

विकासालय की उच्च संगत में डेरा लगा लिया, किन्तु अपने एक प्रिय सम्बन्धी के सम्बन्ध में यह कहा कि यदि यह कालेज की प्रिंसिपलशिप छोड़ कर विकासार्थी बन जाएं तो उन को वह अपनी पैन्शन में से अच्छा भाग अर्पण कर दिया करेंगे।

श्रीमान परमेश्वर दत जी अपने क्षयी रोग जैसी भयानक बीमारी में पूजनीय भगवान की आज्ञा से ठंडे पहाड़ पर जा कर कई प्रकार का शारीरिक आराम और लाभ पा रहे थे। परन्तु उन्हें चिन्ता थी कि भगवान के चरणों से दूर रह कर कभी उन का घमंड न बढ़ जाए। उनको जीवन भेंट करने के फैसले में इस फिक्र से मदद मिली कि किसी नीच आत्मा के प्रभाव उनके हृदय पर जोर से पड़ गए तो उनका उच्च भाव ही न मारा जाए।

श्रीमान धर्मबल जी उस जमाने में जब एक रूपए की कीमत आज के सत्तर रूपए के बराबर होती होगी एक सौ रुपया प्रतिमास पूजनीय भगवान की सेवा में भेजा करते थे। उन्हें चिन्ता थी कि न भेजना आत्मा के लिए हानिकारक है।

जिन्हें आत्मा की चिन्ता होती है वह तो यही जाप करते हैं कि यह आत्मा पुत्र से भी प्रिय है, धन से भी प्रिय है हां, जो कुछ संसार में है सब से प्रिय है।

# हम किस रूप में ढल रहे हैं?

नेचर में जो न्याय विषयक अटल नियम काम करता है उसके अनुसार हम जो भली वा बुरी चिन्ता या क्रिया करते हैं उससे उसी समय भला या बुरा परिवर्तन हमारे आत्मा में आता रहता है। नेचर में न तो कोई उधारी चलती है, न कोई दंड या पुरस्कार क्षण भर के लिए भी मुलतवी होता है और न तनिक भी कोई रूरियायत होती है। यहां तक सफेद व नकदी सौदा है। इधर हम ने कोई चिन्ता या क्रिया की उधर झट उस के साथ साथ हमारे आत्मा में भला या बुरा परिवर्तन आ गया। यह परिवर्तन नेचर में अछिन्न रूप से जारी है और इस से कोई बच नहीं सकता। जिस भाव से परिचालित होकर हम जैसी चिन्ता और क्रिया करते है वैसा ही रूप हमारा आत्मा साथ साथ निर्माण करता रहता है। नेचर में माफी कोई नहीं। मनुष्यों की सरकार किसी की सजा को माफ कर सकती है, या किसी अपराधी को झूठ बोल कर या धोखा देकर छुड़ाया जा सकता है, या कोई आंख बचा कर कस्टम डयूटी देने से या टैक्स देने से अपने आप को बचा सकता है परन्तु आत्मिक जगत में किसी चिन्ता या किसी क्रिया के फल से चाहे वह कितनी ही सूक्ष्म हो कोई बच नहीं सकता। नेचर में पूरी 2 जामा तलाशी है। यह फल आत्मा के नीच और उच्च परिवर्तन के रूप में प्रत्येक चिन्ता और क्रिया के साथ साथ मिलता रहता है। प्रत्येक चिन्ता और क्रिया के साथ हम अपना आत्मिक रूप निर्माण करते हैं। इस रूप में हमें अवश्य ढलना पड़ेगा। बुरे भावों की चिन्ताओं और क्रियाओं से बुरे रूप में ढलना पड़ेगा और उच्च भावो की चिन्ताओं और क्रियाओं से हमें उच्च आत्मिक रूप में ढलने का सौभाग्य मिलेगा। यही नेचर के न्याय विषयक नियम का अर्थ है। नेचर का हिसाब किताब कामिल है। नेचर एक ऐसा कंप्यूटर है जो कभी गलती नहीं करता है। स्वास्थ्य विषयक नियम भंग करने या बदपरहेजी करने के साथ साथ शरीर में बुरा परिवर्तन आता जाता है। रोगों की उत्पत्ति

होती जाती है। कई बार वर्षों तक उन रोगों का पता नहीं लगता परन्तु आखिर वह अपना गुल खिलाते हैं। वह डायबिटीज, गठिया, कैन्सर, दिल की बीमारी, जिगर की खराबी, और कोड़ आदि के रूप में प्रकट होते हैं और फिर मनुष्य उन रोगों को छिपा नहीं सकता। बड़े दुखों और यन्त्रणाओं में से भी उसे गुजरना पड़ता है। इसी प्रकार आत्मा के रोग भी मनुष्य के जीवन में फूट फूट कर प्रकट होते है। आत्मा अंधा कठोर और उल्टा दृष्टा बनता जाता है। वह अपने जीवन के विषय में और नेचर के अन्य विषयों में अमूल्य सत्यों को देखने की बाध्यता खोता जाता है। न वह अपने आत्मिक रूप का सत्य ज्ञान प्राप्त कर सकता है। न वह विश्वगत नाना सम्बन्धियों को पहचान सकता है। कृतज्ञता के बिना वह अपने उपकारियों को नहीं पहचान सकता, श्रद्धा के बिना वह महान आत्माओं को नहीं पहचान सकता। स्वार्थी, कृतघ्न और घमंडी आत्मा पति पत्नी होकर भी एक दूसरे को पहचान नहीं सकते। न वह माता पिता के उपकारी रूप के दर्शन कर सकते हैं।

इसीलिए उच्च जीवन प्राप्त करना या उच्च भावों में विकसित होना एक अनिवार्य या Compulsory है वह optional या अखतियारी मज़मून नहीं है। फिर आत्मिक बुरे रूप में ढ़लने का प्रमाण विविध सम्बन्धों में मिलता है। नीच आत्माओं के पारस्परिक सम्बन्ध नारकीय और घृणित तथा अति दुखदाई बनते जाते हैं। स्वार्थी, घमंडी ईर्षापरायण, नीच घृणाकारी, द्वेष परायण तथा कृतज्ञता, श्रद्धा, सम्मान, सहानुभूति और कर्तव्य भाव से विहीन रह कर कभी भी सम्बन्धों में कोई उच्च मेल, उच्च सुख और सच्ची शान्ति का मुंह नहीं देख सकता। आत्मिक बिगाड़ नारकीय सम्बंधों के रूप में भी बड़े जोर से अपनी घोषणा करता रहता है।

बताया जाता है कि विश्व विख़्यात चित्रकार माइकल एंजिलो ने ईसा मसीह और उनकी माता का एक चित्र बनाया था। ईसा मसीह को बालक रूप में अपनी माँ मैरी की गोद में दिखाया था। उस चित्र के लिए माईकल एन्जिलों ने एक बच्चे को चुना जिस के चेहरे में मासूमियत और कोमलता के अच्छे असर पड़ते थे। बहुत वर्षों के बाद माईकल ने शैतान का भी एक चित्र बनाना चाहा। उसके लिए उसने एक ऐसे मनुष्य को चुना जिसके चेहरे से नीचता शरारत, अपवित्रता और कुत्सितपन के असर पड़ते थे। उस मनुष्य को रोना आ गया कि हाय: ईसा मसीहे के चित्र के लिए आपने जिस बालक को चुना था वह बालक भी मैं ही था। धीरे धीरे नीच कर्म और अपराध करते करते मेरा चेहरा भी ऐसा भयानक बन गया कि शैतान के चित्र के लिए भी आपने मुझे ही चुना।

हमें अख़तियार है कि हम नीच जीवन व्यतीत करें, स्वार्थी रह कर और नीच लक्ष्य धारी रह कर केवल अपने नीच सुखों की तृप्ति के लिए दूसरों के धन, माल या अन्य अधिकारों का अपहरण करें, परन्तु ऐसा करने से जो भयानक फल हमारे जीवन में उत्पन्न होंगे और जिस नीच और कुत्सित रूप में हम ढलते जाएंगे, उससे हमें कोई नहीं बचा सकता।

एक जन श्रद्धा और सन्मान की चिन्ताएं और क्रियाए करते करते दूसरों के सदगुणों और महानता को अधिक से अधिक देखने और अपना भला करने के योग्य बन जाता है। वह आत्मिक उच्च प्रभाव लाभ करके अपनी नीचताओं को अधिक से अधिक देखते जाने और उनसे उद्धार पाने के योग्य बनता जाता है। अपनी हीनता और तुच्छता को देख कर दीन और नम्र बनता जाता

है। परन्तु घमंडी आदमी अपने गुण (अनेक बार झूठे गुण) और दूसरों के अवगुण ही देखता रहता है। ऐसा करते करते वह ख़तरनाक वजूद बनता जाता है। वह स्वांग तो दूसरों को सुधारने का भरता जाता है परन्तु आप अंधा और कठोर और अभागा बनता जाता है। दूसरों को तो क्या ख़ाक सुधारना था अपना रूप ही बिगाड़ लेता है। एक कृतज्ञ आत्मा कृतज्ञता की गतियां करते करते विविध सम्बन्धों में बड़ा सुन्दर कृतज्ञ रूप धारण करता जाता है, शिकवा शिकायत से उस का जीवन मुक्त होता जाता है। उसे चारों जगत और उन के नाना सम्बन्धी अधिक से अधिक उपकारी अनुभव होते जाते हैं। नेचर में उसकी आंखे एक नई स्वर्गीय आंखे बन जाती हैं। कृतज्ञता से विहीन और स्वार्थी आदमी अंधा है। उसकी आंख तो बहुत रोगी और विकृत आंख है। सेवाकारी और परोपकारी जन सेवा और परोपकार की गतियां करते करते उन्हीं में उच्च रस और उच्च सुख अनुभव करता जाता है। वह अपने धन को अपने लिए कम और भलाई के कामों में अधिक खर्च करने में ही तृप्ति अनुभव करता है। यह स्थूल शरीर छोड़ते समय उसे बड़ी भारी तसल्ली और खुशी होती है। स्वार्थी आत्मा का जीवन अंधकारमय होता है। नीच दुख और शिकवा शिकायतों से उसका पीछा नहीं छूटता।

अहंकारी जन अपनी कीमत अधिक लगाते - लगाते और अपनी योग्यता को झूठ मूठ बड़ा देखते - देखते तथा दूसरों की कीमत कम लगाते लगाते और अपने आपको बड़ा और औरों को तुच्छ समझते समझते फिर योग्य, बड़े और त्यागी जनों का भी अपमान करता चला जाता है। नीच घृणा और निन्दा की गतियां करता रहता है। मान, बढ़ाई या प्रशंसा के भाव से दान या सेवा करने या प्रचार करने वाला जन सारा त्याग और परिश्रम करके भी नीच रूप में ढलता जाता है। वर्षों के बाद पता लगता है कि उच्च जीवन की मंज़िल पर पहुंचने की बजाए यह तो बदनसीबी और खालीपन की मंज़िल पर पहुंच गया।

हमें नेचर में प्रत्येक गति के साथ भला या बुरा रूप प्राप्त होता जाता है। नीच भावों से नीच और उच्च भावों से उच्च रूप प्राप्त होता है और यही रूप परलोक में भी हमारे साथ रहता है। हम नेचर को कभी ठग नहीं सकते। हमारे लिए सीधा और साफ रास्ता यह है कि हम उच्च भाव विकसित करें और नीच भावों से मोक्ष प्राप्त करें। यह हमारे अपने वश की बात नहीं। परम पूजनीय भगवान देवात्मा की ज्योति शक्ति पाकर ही हम अपनी योग्यता अनुसार इसमें सिद्ध काम हो सकते हैं। इसीलिए परम पूजनीय भगवान देवात्मा का सम्बन्ध परम आवश्यक और जीवनदायक सम्बन्ध है।

## विशेष सूचना

धर्म सम्बन्धियों को यह जानकर हर्ष होगा कि इस नये वर्ष में तीन सत्संगों की तारीख़े निश्चित हो गई हैं।

(1) कल्याण :- माता-पिता संन्तान ब्रत 26, 27, 28 जनवरी 2024 ई०
(2) संगरूर देव समाज उत्सव - 8,9,10 मार्च 2024 ई०
(3) मल्लेंका-पति पत्नी व्रत - 5, 6, 7 अप्रैल 2024 ई०

- देव समाज प्रबन्ध की ओर से

# शोक समाचार

प्यारे धर्म सम्बन्धियों,

बहुत शोक का विषय है कि हमारे बहुत सम्मान के योग्य धर्म सम्बन्धी श्रीमान जगजीत सिंह जी का 28.12.2023 को दिल का दौरा पड़ने से अचानक देहान्त हो गया।

वह बहुत चाव भाव और उत्साह से भरकर महोत्सव में शामिल होने के लिए आए थे। आने से पहले उन्होंने कहा था कि "मैं भजनों के गान के लिए जो पार्टी लेकर आऊंगा, उसका सारा खर्चा मैं खुद दूंगा।" महोत्सव की सभाओं से इतने प्रभावित थे कि मुझे कहने लगे कि मुझे किसी ने कहा कि आपको आगे से देव आश्रम का स्थान नहीं मिलेगा। उन्होंने बड़े उत्साह से भरकर कहा कि फिक़र न करो, यदि कभी ऐसा होता है, तो मेरे पास शायद 2 एकड़ कहा लुधियाना के पास जगह है, वहां 5 कमरे बने हुए हैं, बाकी का सारा प्रबन्ध मैं करूंगा, गुरू का कारज होना चाहिए।

वह हमेशा दान करते रहे, क्या देव आश्रम के लिए कई प्रकार का सामान बनाने में, क्या मल्लेका मन्दिर के लिए दान करने में आगे रहते थे। वह बहुत नेक और श्रद्धावान सेवक थे।

28 तारीख को जब महोत्सव की आख़िरी सभा हो रही थी, तो वह अपना सामान लेकर लुधियाना के लिए निकल पड़े, परन्तु तभी अम्बाला रोड पर देव आश्रम की ओर जाने वाले बड़े गेट पर गिर पड़े। उनको गए तकरीबन आधा घण्टा हो गया था, तो हमारा एक ड्राईवर जो चण्ड़ीगढ़ से आश्रम की ओर ही आ रहा था, उसने उन्हें पहचान लिया और कार में डालकर देव आश्रम में ले आया। उस समय उनमें जीवित होने के कोई लक्षण दिखाई नहीं देते थे, फिर भी उन्हें डेराबस्सी हस्पताल ले गए, जहां उन्हें मृत घोषित कर दिया। फौरन उनके बेटे को फोन किया जो लुधियाना से चल पड़े। उनके आने तक बहुत से धर्म सम्बन्धी उपस्थित रहे। जब उनके सुपुत्र कुछ साथियों के साथ पहुँचे, तो सबने मिलकर उनके लिए शुभ कामना की और उन्हें आख़िरी विदाई दी।

यह बहुत दुखदाई नज़ारा था। जाने से पहले वह अपना भाव प्रकाश लिखकर देकर गए। किसे पता था कि वह उनका आख़िरी भाव प्रकाश होगा। सामाजिक वा पारिवारिक जन सब सकते में थे। हम सब उनके लिए शुभ कामना करते हैं कि उनका परलोक में मार्ग प्रशस्त हो और सामाजिक और पारिवारिक जनों को धैर्य मिले।

# भजन

कितने अवसर, कितनी घड़ियां, और कितना समय गुज़ार दिया,
हाय! जीवन दाता को मैंने दिल पर न अधिकार दिया।
तुमको पाकर भी हे भगवन, नीच सुखों को प्यार किया।
उच्च धर्म सम्बन्धी पाए, मण्डल पाया उच्च अनमोल,
श्रद्धा वहीन रहकर मैंने अमृत से इन्कार किया।
मैली चिन्ता नीच कामना, पोषण करके हृदय में,
कोमलता और पवित्रता पर कैसा अत्याचार किया।
रोज़ रोज़ ही किया निरादर, तुमरी ज्योति का भगवन,
हृदय किया कठोर गुरू जी, बन्द जीवन का द्वार किया।
अपनत्व में ही रत रह रहकर, स्वार्थ को न तज करके,
खुद का पतन किया और निष्फल औरों का संग्राम किया।
शुभ प्रतिज्ञा वर्षों तोड़ी, आत्म बल खोया अपना।
दुर्बल और निस्तेज बनाया और अपना मुर्दाख़्वार किया।
नीच घृणा के पीकर प्याले, खुशी 2 मदहोश हुआ,
अहं कोष को बढ़ा बढ़ा कर, हाय! अपना मुर्दाख़्वार किया।
किसने तुम्हारे बिन भगवन, ऐसों का उद्धार किया।

# माता पिता के सम्बन्ध में सन्तान के लिए उपदेश

भगवान देवात्मा ने इस विषय में पूजनीय देवशास्त्र चौथे खंड में जो अति हितकर आदेश दिए हैं, उनमें से कुछ का सारांश नीचे दिया जाता है।

माता - पिता यज्ञ साधन कर्ता प्रत्येक संतान के लिए आवश्यक है कि : -

(1) वह अपने माता - पिता को अपना जन्मदाता, पालनकर्ता, रक्षाकर्ता और शिक्षादाता उपलब्ध करके उनके साथ अपना अति पवित्र और घनिष्ट संबंध अनुभव करे।

(2) वह अपने माता - पिता के संबंध में अपने आपको सब प्रकार की नीच गतियों से मुक्त करने और मुक्त रखने और उच्च गतिदायक प्रत्येक भाव के उत्पन्न करने की आवश्यकता को भली भाँति अनुभव करे।

(3) वह अपने माता - पिता के प्रति उचित रूप से सम्मान भाव अनुभव और प्रदर्शन करे।

(4) वह अपने माता - पिता के संबंध में अपने आपको कृतज्ञ प्रमाणित करे।

(5) वह जहाँ तक संभव हो अपने माता - पिता के रोग और दुख और उनकी विपदग्रस्त और असहाय अवस्था में उनकी आवश्यक सुश्रूषा, सेवा और सहाय करे।

(6) वह अपने माता - पिता की शारीरिक, पारिवारिक और अन्य आवश्यकताओं को जहाँ तक अपनी सामर्थ्य के अनुसार पूरी कर सकता हो, वहाँ तक तन, मन, धन आदि के द्वारा पूरी करे।

(7) वह योग्यता रखने पर अपने माता - पिता के लिए उनके ज्ञान और भाव विषयक विकास में जहाँ तक संभव हो सेवाकारी बने।

(8) वह अपनी ऐसी प्रत्येक अनुचित क्रिया के संबंध में बोध लाभ करने पर कि जिससे उसके माता - पिता को किसी प्रकार का अनुचित क्लेश व दुख पहुँचा हो व उन्हें कोई अनुचित हानि प्राप्त हुई हो, उचित परिशोध करके उनके साथ अपने संबंध को पवित्र करे।

(9) वह अपने माता - पिता के लिए उचित रूप से मंगल कामना का साधन करे।

(10) वह जानबूझकर अपनी किसी अनुचित क्रिया से अपने माता - पिता के साथ अपने संबंध को शिथिल न करे।

(11) वह जानबूझकर अपनी किसी अनुचित क्रिया से अपने माता - पिता को किसी प्रकार का कोई क्लेश व दुख न पहुँचाएं।

(12) वह जहाँ तक संभव हो, अपने माता - पिता के किसी रोग व उनकी किसी पीड़ा की अवस्था में आवश्यक सुश्रूषा करने से विमुख न हो

***Published on 5th of the month***
20
*Regd. Postal No.CHD /0077/ 2021-2023*
*Regd. with Registrar News Paper No. 72258/88*

# देव समाज के पाठ और विचार के साधनों की तालिका (वर्ष 2024 ई०)

| | | |
|---|---|---|
| 1 | माता पिता सन्तान के सम्बन्ध में | 29 जनवरी 2024 (गणेश चतुर्थी) |
| 2 | भाई बहनों के सम्बन्ध में | 14 फरवरी 2024 (बसंत पंचमी) |
| 3 | देव समाज के सम्बन्ध में (देव समाज उत्सव) | 4, 5, 6 मार्च 2024 |
| 4 | पति पत्नी के सम्बन्ध में | 25 मार्च 2024 (होली) |
| 5 | उद्भिद जगत् के सम्बन्ध में | 9 अप्रैल 2024 (हिन्दू नव वर्ष) |
| 6 | भृत्य स्वामी के सम्बन्ध में | 24 अप्रैल 2024 |
| 7 | स्वंशीय जनों के सम्बन्ध में | 22 मई 2024 |
| 8 | स्वदेश के सम्बन्ध में | 17 जून 2024 (निर्जला एकादशी) |
| 9 | साथी सेवकों के सम्बन्ध में (सेवक उत्सव) | 20, 21, 22 जुलाई 2024 |
| 10 | पशु जगत् के सम्बन्ध में | 11 सितम्बर 2024 (राधा अष्टमी) |
| 11 | सत्य धर्म बोध उत्सव (स्वास्तित्व के संबंध में) | 27, 28, 29 सितम्बर 2024 (रक्षा बंधन) |
| 12 | परलोक के सम्बन्ध में | 2 अक्तूबर 2024 (अंतिम श्राद्ध) |
| 13 | स्वजाति के सम्बन्ध में | 12 अक्तूबर 2024 (दशहरा) |
| 14 | भौतिक जगत् के सम्बन्ध में | 1 नवम्बर 2024 (दीपावली) |
| 15 | मनुष्य जगत् के सम्बन्ध में | 15 नवम्बर 2024 (गंगा स्नान) |
| 16 | भगवान देवात्मा के सम्बन्ध में (महोत्सव) | 14, 15, 16, 17 दिसम्बर 2024 |

**नोट :–** 1) परम पूजनीय भगवान देवात्मा के संबंध में आरम्भिक दिन 16 नवम्बर 2024 ई. दिन शनिवार है।
2) परम पूजनीय भगवान देवात्मा का शुभ जन्म दिन 16 दिसम्बर 2024 ई दिन सोमवार है।
3) साधनों को जो जो विशेष दिन किसी हिन्दू त्यौहार के दिन नियत किए गए है, वह साधन विविध स्थानों पर जहाँ तक संभव हो उसी दिन में मनाए जावें कि जिस दिन वह त्यौहार मनाया जाए। आवश्यकतानुसार इसमें तबदीली की जा सकती है।

*श्रीमान बलदेव सिंह जी, एम. ए, (लाईफ़ वर्कर) मंत्री – Dev Samaj Global, प्रिंटर, पब्लिशर और मालिक*
*"धर्म जीवन" ने* ***Surya Laser Den, Chandigarh*** *से छपवाकर*
*म. नं. 3154, सैक्टर 21–डी, चण्डीगढ़ से प्रकाशित किया।*

**Book Posts**